रिकॉर्ड :– तूने रात गँवाई सोके..... ॐ पिताश्री 22/9/62

ओम शान्ति। परमपिता प॰ शिव बैठकर अपने बच्चों .....माओं अथवा (आत्मा)ओं को समझाते हैं; क्योंकि आत्माओं को यह पता ही नहीं है कि हमारा बाप कौन है? जीव के आत्मा को यह तो मालूम है कि यह शरीर मेरा है; परन्तु आत्मा को यह मालूम नहीं कि मैं किसका सन्तान हूँ; इसलिए आत्मा को ही कहा जाता है नास्तिक। जीव आत्मा को नास्तिक नहीं कहेंगे। जीव की आत्मा को तो पता है कि यह शरीर मेरा है। यह सभी मनुष्यों को पता है कि हम आत्मा है अथवा जीवात्मा को है। कोई को समझावेंगे तो कहेंगे, यह पवित्र आत्मा है अथवा यह महान आत्मा है; परन्तु उसे पूछा जाय महान आत्मा भी सन्तान किसका है? तो कहेंगे, पता नहीं। सभी बच्चियाँ इन बातों (को) भूली हुई हैं कि आत्मा का रचयिता कौन है? शरीर का रचयिता तो लौकिक बाप है; परन्तु (वो यह) रियलाइज़ेशन नहीं है कि मेरा बाप कौन है? सारी दुनिया इस एक बात में मूँझी हुई है। आत्मा यह जानती है, मेरा यह शरीर है। इनको रचने वाला हमारा लौकिक बाप है, यह तो ठीक है; परन्तु आत्माओं का बाप कौन है?– यह किसको पता न है। आत्मा कहती है इस मम् शरीर का रचयिता लौकिक बाप है; पर आत्मा से यह पूछा जाता कि तुम आती कहाँ से हो? ज़रूर कहेगी, परमधाम से। तो ज़रूर पारलौकिक बाप भी होगा ना। वो तुम्हारा पारलौकिक बाप कौन है? इसको कहा जाता है रियलाइज़ेशन करना। मुझ आत्मा का बाप कौन है? आत्मा को यह पता न होने कारण आत्मा को नास्तिक कहा जाता है अथवा निधणके, ऑर्फन कहा जाता है। तो इस समय सारी दुनिया ऑर्फन हो गई। आपस में लड़ते रहते हैं। घर के लिए आपस में लड़ते हैं तो कहा जाता है तुम्हारा कोई धणी–धोणी है, झगड़(ते) तुम क्यों हो! विद्वान–आचार्य–पण्डित कोई को भी पता नहीं है। कह देंगे, हम बुदबुदा हैं। सागर से निकले हैं फिर सागर में लीन हो जाऊँगा। गोया सागर का बच्चा ठहरा। फिर कह देते, सागर से हम बुदबुदा बने हैं। अगर कहें हम अंश है तो भी अलग हो गया ना। बड़ी ज्योत का अंश है तो भी टुकड़ा अलग हो गया। फिर तत्व में लीन होने की बात तो सिद्ध नहीं होती; क्योंकि आत्मा तो अविनाशी .... है। इमॉर्टल आत्मा का बाप भी इमॉर्टल होना चाहिए। मॉर्टल शरीर का बाप मॉर्टल है। शरीर को देख झट कहेंगे यह हमारा बाप है; परन्तु आत्मा का बाप कौन? महान आत्मा, पवित्र आत्मा कहती है ना। कहते हैं मेरी आत्मा को मत रझाओ। यह आत्मा बोलती है। तो आत्मा को यह पता नहीं है कि मेरा बाप कौन है? अभी यह रियलाइज़ कौन करे। बाप खुद आए अपना परिचय देते हैं। जहाँ आत्माएँ रहती हैं वो है परमधाम। ..... परलोक अर्थात परे ते परे लोक और जहाँ ब्र०वि०शं० रहते हैं, उनको कहेंगे सूक्ष्मवतन। बाकी हम मनुष्य तो नीचे रहते हैं। यहाँ यह है त्रिलोकी तीन लोक। मूलवतन इनकॉरपोरियल वर्ल्ड अथवा निराकारी दुनिया। सूक्ष्मवतन और स्थूल साकारी वर्ल्ड। तीन लोक का राज़ समझना है। मूलवतन जहाँ से हम आत्माएँ आती हैं। आत्माएँ वहाँ शान्त है। फिर दूसरा है– सूक्ष्मलोक, जहाँ आत्माएँ मूवी हैं। वहाँ सूक्ष्मवतन में बच्चियाँ जाती हैं भोग लेकर। निराकारी दुनिया में भोग नहीं ले जा सकतीं। यह जाती हैं सूक्ष्मवतन में। वहाँ सभी कट्ठे होते हैं। वहाँ मूवी होती है। जैसे मिसाल बाइसकोप भी देखे होंगे। टॉकी नाटक है, मूवी बाइसकोप भी देखा था। तो टॉकी दुनिया यह है, मूवी है सूक्ष्मवतन में। यह दुनिया नहीं जानती। बाबा पहले सूक्ष्मवतन रचते हैं फिर स्थूल वतन में आते हैं। तुम बच्चियाँ सूक्ष्मवतन में जाकर बाप से बातचीत भी करते हो। सन्देश ले निराकारी दुनिया में नहीं जाते हो। सन्देश ले बाबा के पास आकारी दुनिया सूक्ष्मवतन में जाते हो। यह है साकारी दुनिया। इन तीन लोकों का किसको भी पता नहीं है। परलोक है ऊपर में, सूक्ष्मवतन है बीच में और यह साकारी दुनिया है नीचे में। हिस्ट्री–जॉग्राफी यहाँ की है। सूक्ष्मवतन में कोई

राजाई नहीं होती है। वहाँ कोई 84 जन्म नहीं भोगते हैं। यह हर एक बात समझने की हैं। ये कोई झूठी दंत कथाएँ नहीं हैं। हमारा बाबा भी है गुप्त, हमारी पढ़ाई भी गुप्त और स्टेट्स भी गुप्त। वो तो यहाँ ही पढ़कर बैरिस्टर, इंजीनियर आदि बनते हैं। हम इस पढ़ाई से पद पावेंगे नई दुनिया में; क्योंकि हम जानते हैं कि ये पुरानी दुनिया तो खलास होनी है। देवताएँ पुराणी दुनिया में कब पैर नहीं धरते। श्री कृष्ण पुराणी दुनिया में आ न सके। पुराणी दुनिया तो खलास होनी है, यह है नई दुनिया के लिए नई नॉलेज। यह मनुष्य सृष्टि है, सतयुग में देवी–देवताओं की सृष्टि है। गॉड–गोडज़ नहीं कह सकते। फिर तो यथा राजा गॉड–गॉडेज़ तथा प्रजा को भी गॉड–गाडेज़ कहना पड़े। प्रजा को गॉड–गॉडेज़ कहना यह तो लॉ नहीं कहते। इसलिए उनको देवी–देवताओं की दुनिया कहते हैं; परन्तु मर्तबा इतना रखते हैं। ल॰ना॰ गॉड–गॉडेज़ थे; क्योंकि गॉड पढ़ाते हैं तो ज़रूर गॉड–गॉडेज़ बनावेंगे ना। तो बाबा ने समझाया कि यह जो मनुष्य सृष्टि है उनमें जीवात्माएँ हैं। आत्मा से पूछा जाता है– तुम्हारा बाप कौन है? परलोक से आत्माएँ आती हैं तो ज़रूर उनका पारलौकिक बाप भी होगा ना। परमधाम में रहने वाला परमपिता प॰ है हम आत्माओं का बाप। वो फिर सभी को भेज देते हैं। कहते हैं, सभी धर्म स्थापकों को वो भेज देते हैं। हम याद भी उनको करते हैं। लौकिक बाप को तो इस सृष्टि पर इन आँखों से देखते हैं। प॰ को हमेशा ऊपर नज़र कर याद करेंगे। कहेंगे– हे पिता, हे प्रभु। आत्माओं का घर ही ऊपर में है। लौकिक संबंध से यह स्थूल घर याद आता है। पारलौकिक संबंध से ऊपर का परमधाम याद आवेगा। जब कोई मरता है तो उसको कहा जाता है भगवान को याद करो। भगवान तो ऊपर में है। यहाँ थोड़े ही है। भगवान का परमधाम है ऊँच ते ऊँच। उनके लिए गाया भी जाता है ऊँचा उनका नांव, ऊँचा उनका रांव। जप साहब से भी बातें उठाए सि(क्ख) लोगों को समझाना है। तुम बच्चों को बाप कहते हैं– मैं आया हूँ तुमको कौड़ी से हीरे जैसा बनाने। हमने तुमको सुख के संबंध में भेजा था। फिर माया ने दुःख के बंधन में बाँधा है। यहाँ यह है कर्मबन्धन। सतयुग में कर्मबंधन नहीं कहेंगे। वो तो है संबंध। यहाँ है बंधन। बंधन खराब होता है। हमने तुमको सतयुग में सुख के संबंध में भेजा था, फिर माया ने दुख के बंधन में बाँधा है। सतयुग–त्रेता में तुमने सुख भोगा। दुख होता ही तब है जब तमोप्रधान होता है, जड़जड़ीभूत अवस्था हो जाती है। जैसे शरीर की भी पहले बाल्य अवस्था होती है, उनको कहेंगे– सतो, फिर रजो, तमो। बूढ़े जड़जड़ीभूत अवस्था हो जाती है। यह भी ऐसे हैं। कलियुग का अन्त है जड़जड़ीभूत अवस्था। यह पुरानी दुनिया अभी खलास होनी है। यह कुंभी पाक नर्क है ना। बिच्छू–टिण्डण, नाग–बलाएँ पैदा करते रहते हैं। सभी नर्कवासी हैं। फिर स्वर्गवासी बनना है। अब फिर अपन मनुष्य से देवता बन रहे हैं परमपिता प॰ द्वारा। तो यह हुई गॉड फादर की यूनिवर्सिटी। इनकी एम–ऑब्जेक्ट क्या है, यह भी कोई समझते नहीं हैं। अरे, बैरिस्टर पढ़ाए करके क्या बनावेगा? ज़रूर बैरिस्टर ही बनावेगा ना। गॉड भी ज़रूर पढ़ाए कर गॉड–गॉडेज़ बनावेगा। यह ल०ना० गॉड–गॉडेज़ भारत में ही राज्य करते थे। मनुष्यों ने अरबों बरस सुने हैं तो मूँझ गए हैं। अभी बाप समझाते हैं, तुम्हारा यह अन्तिम जन्म है। यह दुनिया ही खलास होनी है। अभी छोटे–बड़े सभी की वानप्रस्थ अवस्था है। वाणी से परे निर्वाणधाम जाना है। मनुष्य भल अक्षर कहते हैं; परन्तु अर्थ नहीं समझते। हरेक बात का अनर्थ कर देते। बाप कहते हैं– लाडले बच्चे, मैं तुम्हारा ओबीडियेंट सर्वेन्ट हूँ। आया हूँ तुमको पतित से पावन बनाने। तो अभी मेरी मानो। इसी को ही श्रीमत कहा जाता है। श्री अर्थात श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ। वो है ही परमपिता प॰। वो आते हैं मत देने लिए। वो जन्म–मरण में नहीं आते हैं। ब्र०वि०शं० भी अपना शरीर धारण करते हैं। प॰ का कोई शरीर है नहीं, तब कहते हैं– मैं अशरीरी निराकार हूँ। आकार तो

(मुरली अधूरी है)